**Shikshan Sanshodhan** : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 8, Issue - 10, October - 2025
ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 9.134

DOIs:10.2018/SS/202510008 --:-- Research Paper / Article / Review

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

**राजेश कुमार**
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश।
ईमेल- rajeshrajora2017@gmail.com

**डॉ० मंजू रानी**
शोध निर्देशिकाशिक्षाशास्त्र विभाग, शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

**सारांश :** भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है, जिसने हजारों वर्षों तक मानवता को जीवन के विभिन्न आयामों में मार्गदर्शन दिया है। यह परंपरा केवल आध्यात्मिकता और दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला, संगीत, राजनीति और शिक्षा तक का गहन ज्ञान समाहित है। वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के इस दौर में जब विश्व अनेक संकटों, जलवायु परिवर्तन, मानसिक तनाव, असमानता और सांस्कृतिक विघटन से जूझ रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र और संतुलित जीवन दृष्टि प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसकी स्थापना 1925 में हुई थी, अपने शताब्दी वर्ष (सितम्बर, 2025) में इस परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए कार्य कर रहा है। योग, आयुर्वेद, वेदांत, अहिंसा और भारतीय शिक्षा प्रणाली जैसे तत्व आज विश्व में स्वीकार्य और प्रासंगिक होते जा रहे हैं। संघ की शाखाएँ, सेवा-प्रकल्प और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सांस्कृतिक गतिविधियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

यह शोधपत्र गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रयासों का विश्लेषण किया गया है। इसमें विशेष रूप से योग-दिवस, आयुर्वेदिक चिकित्सा का वैश्विक प्रसार, भारतीय दर्शन की शिक्षा में भूमिका और संघ की वैश्विक गतिविधियों को उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल भारत की धरोहर है बल्कि वैश्विक समाज के लिए जीवनदायी मार्गदर्शन भी है।

**मुख्य शब्दः** भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, योग, शिक्षा, दर्शन, आयुर्वेद, शताब्दी वर्ष, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

## 1. परिचय

भारत की सभ्यता और संस्कृति का इतिहास सहस्राब्दियों पुराना है। वेद, उपनिषद, गीता, महाकाव्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, नाट्यशास्त्र और दर्शन -ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा के अभिन्न अंग हैं। इस परंपरा की विशेषता यह है कि यह केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक और मानव कल्याण पर केंद्रित है। ''**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः**'' और ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' जैसे विचार भारतीय दृष्टिकोण की सार्वभौमिकता को प्रकट करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और योग जैसी विद्या शामिल हैं। यह केवल आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वैज्ञानिक, सामाजिक और नैतिक आयाम भी हैं।

आज विश्व जिस प्रकार के संकटों से जूझ रहा है- जलवायु असंतुलन, मानसिक स्वास्थ्य की समस्या, हिंसा, असमानता और सांस्कृतिक विघटन, उनके समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित हैं। योग और ध्यान मानसिक शांति व स्वास्थ्य प्रदान करते हैं, आयुर्वेद समग्र चिकित्सा का आधार है, भारतीय दर्शन जीवन के अर्थ और उद्देश्य की स्पष्टता देता है और भारतीय शिक्षा प्रणाली संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह दृष्टिकोण रहा है कि भारत की संस्कृति और परंपरा केवल

भारत के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक परिप्रेक्ष्य से देखना अनिवार्य और सार्थक है।

**2. विषय का महत्व**

भारतीय ज्ञान परंपरा दुनिया की सबसे प्राचीन और समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है। इसमें दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, कला और सामाजिक मूल्य शामिल हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित करने और उसका प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विषय का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल भारतीय सांस्कृतिक और शैक्षिक विरासत को समझने में सहायता करता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान और उसके योगदान को पहचानने का अवसर भी प्रदान करता है।

**3. शोध का उद्देश्य**

इस शोध का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से शोध निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित रहेगा :

- भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयाम और उनके वैश्विक प्रभाव का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के योगदान और पहल का मूल्यांकन करना।
- आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता और विश्व स्तर पर उसके योगदान की पहचान करना।

**4. अनुसंधान पद्धति**

यह शोधपत्र गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। इसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा इसके वैश्विक प्रचार-प्रसार में निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक शोध-पत्रों, संघ साहित्य और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टों को आधार बनाया गया है।

स्रोतों के रूप में वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे शास्त्रीय ग्रंथों के साथ-साथ आधुनिक विद्वानों जैसे डॉ. एस. राधाकृष्णन, डेविड फ्रॉली और विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्टों का अध्ययन किया गया। तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग करके भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों (जैसे योग, आयुर्वेद, शिक्षा प्रणाली) की तुलना आधुनिक पश्चिमी दृष्टिकोण से की गई है।

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः एक परिचय**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर, 1925 को डॉ. के. बी. हेडगेवार द्वारा नागपुर में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्निर्माण करना था। आरएसएस ने अपने प्रारंभिक वर्षों में संगठन की मूल संरचना और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया। समय के साथ यह संगठन देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गया और सामाजिक चेतना, राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का एक प्रभावशाली माध्यम बन गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य उद्देश्य भारत को एक सशक्त और एकजुट राष्ट्र बनाना है। इसका आदर्श व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना और समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। संघ की विचारधारा ''**संस्कृति आधारित राष्ट्रवाद**'' पर आधारित है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने, सामाजिक सौहार्द बनाए रखने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि भारतीय समाज को समग्र रूप से मजबूत और सशक्त बनाने की दिशा में भी कार्य करता है।

**भारतीय ज्ञान परंपराः अवधारणा और स्वरूप**

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ज्ञान का संग्रह नहीं बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण है, जिसने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। इसमें जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक आयामों का समन्वय किया गया है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, महाभारत और रामायण जैसी ग्रंथों में जीवन दृष्टि, धर्म, कर्म और मोक्ष की शिक्षाएं संजोई गई हैं। भारतीय दर्शन जैसे न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मिमांसा और वेदांत ने तर्क, अनुभव और आत्मानुभूति के माध्यम से ज्ञान की खोज को प्रोत्साहित किया। इस परंपरा में केवल तात्त्विक चिंतन ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन के सिद्धांतों और सामाजिक मूल्यों का समावेश भी है, जो जीवन को संतुलित, नैतिक और मानवीय दृष्टिकोण से विकसित करने में सहायक हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संचय नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक जिम्मेदारियों की समझ विकसित करना था। गुरुकुल प्रणाली, विश्वविद्यालय जैसे नालंदा, तक्षशिला और प्राचीन विज्ञान जैसे गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद और खगोलशास्त्र ने वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बनाई। साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा ने सामाजिक मूल्यों जैसे अहिंसा, सत्कार, दायित्व, आत्म-अनुशासन और

समुदाय के कल्याण को भी बढ़ावा दिया। योग, आयुर्वेद और प्राकृतिक विज्ञान के सिद्धांत आज भी वैश्विक शिक्षा और स्वास्थ्य प्रणालियों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा, विज्ञान और सामाजिक मूल्यों के माध्यम से मानव समाज के सर्वांगीण विकास में स्थायी योगदान देती रही है।

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय ज्ञान परंपरा का संबंध

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़कर व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शैक्षिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यार्थियों और युवाओं को न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया जाता है, बल्कि उनमें नैतिकता, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी किया जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित आचार, संस्कार और जीवन मूल्य संघ की गतिविधियों का मूल आधार हैं। योग, सांस्कृतिक शिक्षा, वीरता और सेवा भाव को शामिल करके संघ यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति केवल ज्ञान का भंडार न बने, बल्कि उसका व्यवहारिक और सामाजिक उपयोग भी कर सके। इस प्रकार संघ शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण और समाज में सकारात्मक योगदान देने की दिशा में काम कर रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय ज्ञान परंपरा के आदर्शों को अपनाकर समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाता है। संघ के स्वयंसेवक सामाजिक समस्याओं जैसे शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता के लिए लगातार कार्यरत हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सत्यम, धर्म और सेवा भाव के सिद्धांतों के माध्यम से संघ समाज में नैतिक जागरूकता और सामाजिक अनुशासन को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, संघ द्वारा चलाए जाने वाले स्वयंसेवा और समाजोपयोगी कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण की भावना को मजबूती प्रदान करते हैं, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना भी प्रबल होती है।

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी वर्ष में उपलब्धियां और पहल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। संगठन ने शिक्षा, सामाजिक चेतना और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में नई पहल की हैं। शताब्दी वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देशव्यापी कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमें युवाओं को नेतृत्व, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्य सिखाए गए। इसके अलावा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भी संघ ने सक्रिय भूमिका निभाई। इन पहलों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने यह संदेश दिया कि भारतीय समाज में ज्ञान, संस्कार और सेवा का समन्वय ही राष्ट्र की असली ताकत है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शिक्षा और संस्कार आधारित कार्यक्रमों को अपने प्राथमिक कार्यों में शामिल किया है। शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ ने स्कूलों और कॉलेजों में पाठ्येतर गतिविधियों, युवा शिविरों और विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य न केवल अकादमिक शिक्षा को बढ़ावा देना था, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना भी था। संघ के माध्यम से शिक्षा को केवल ज्ञान के स्रोत के रूप में नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्रभक्ति के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया।

सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शताब्दी वर्ष में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं की शुरुआत की। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, लोक कला और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। इसके अलावा, गरीब और जरूरतमंद समुदायों के लिए स्वास्थ्य शिविर, सफाई अभियान और आपदा राहत कार्यों का भी संचालन किया गया। इन पहलों के माध्यम से संघ ने समाज में एकजुटता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित किया, साथ ही भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को व्यापक स्तर पर पहचान दिलाई।

### ➢ योग और ध्यान का वैश्विक प्रसार

भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा योगदान योग है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि यह एक समग्र जीवन-दृष्टि है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा का संतुलन साधा जाता है। पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है- ''**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**'' अर्थात योग मानसिक वृत्तियों के निरोध की प्रक्रिया है।

संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में भारत के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए 21 जून को ''**अंतरराष्ट्रीय योग दिवस**'' घोषित किया। 2015 से आज तक विश्व के 180 से अधिक देशों में लाखों लोग इस दिन योगाभ्यास करते हैं। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि भारतीय परंपरा ने वैश्विक स्तर पर अपनी प्रासंगिकता स्थापित कर ली है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उससे जुड़े संगठन जैसे ''**योग भारती**'' और ''**पतंजलि योगपीठ**'' योग को समाज तक पहुँचाने में अग्रणी रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में प्रातःकालीन प्रार्थना और आसन-प्राणायाम की परंपरा योग के सामाजिक प्रसार का उदाहरण है। आज अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और जापान के विश्वविद्यालयों में ''**Yoga Studies**'' एक शैक्षणिक अनुशासन के रूप में पढ़ाया जा रहा है। परिणामतः योग ने मानसिक स्वास्थ्य, तनाव मुक्ति, शारीरिक फिटनेस और आध्यात्मिक संतुलन के क्षेत्र में वैश्विक समाज को नई दिशा दी है।

### ➢ आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा प्रणाली

भारतीय चिकित्सा प्रणाली, जिसे आयुर्वेद कहा जाता है, हजारों वर्षों से स्वास्थ्य और जीवनशैली का मार्गदर्शन कर रही है। आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ है- **''आयुःवेदः''** अर्थात जीवन का विज्ञान। इसमें आहार, दिनचर्या, औषधि और पंचकर्म जैसी विधियाँ शामिल हैं।

कोविड-19 महामारी के समय आयुर्वेदिक औषधियों जैसे अश्वगंधा, गिलोय और तुलसी ने रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आयुष मंत्रालय और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े संगठन जैसे **"आयुष भारती"** और **"आरोग्य भारती"** ने गाँव-गाँव में औषधीय पौधों का वितरण किया।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2022 में गुजरात के जामनगर में **"Global Centre For Traditional Meditation"** की स्थापना की, जो भारतीय चिकित्सा प्रणाली की वैश्विक मान्यता का प्रतीक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान भी भारतीय समग्र चिकित्सा दृष्टि की आवश्यकता महसूस करने लगा है। परिणामतः आयुर्वेद अब केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका में भी स्वास्थ्य का वैकल्पिक मॉडल बन रहा है।

### ➢ भारतीय दर्शन और शिक्षा दृष्टि

भारतीय दर्शन विश्व को अद्वितीय आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि प्रदान करता है। अद्वैत वेदांत **''अहं ब्रह्मास्मि''** के सिद्धांत के माध्यम से आत्मा और ब्रह्म की एकता का संदेश देता है। जैन दर्शन अहिंसा और अपरिग्रह का मार्ग सुझाता है। बौद्ध दर्शन **''मध्यम मार्ग''** द्वारा संयम और करुणा की शिक्षा देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय परंपरा ने **''गुरुकुल प्रणाली''** के माध्यम से चरित्र निर्माण और समग्र विकास पर बल दिया। आज वैश्विक स्तर पर शिक्षा में **"Holistic Education", "Value Education"** और **"Experiential Learning"** की चर्चा भारतीय दृष्टि से ही प्रेरित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इसमें वेद, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद और दर्शन के अध्ययन को प्रोत्साहित किया गया है। संघ और उसके शैक्षिक संगठनों ने इस नीति के निर्माण में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई है। परिणामतः भारतीय दर्शन और शिक्षा दृष्टि विश्व को जीवन और शिक्षा का वैकल्पिक मॉडल प्रदान कर रही है।

### ➢ सांस्कृतिक कूटनीति और संघ की भूमिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि भारतीय संस्कृति केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की धरोहर है। इसी दृष्टि से संघ और उसके सहयोगी संगठन वैश्विक मंच पर भारतीय परंपरा का प्रचार-प्रसार करते हैं।

विवेकानंद केंद्र, विश्व हिंदू परिषद, **Overseas Friends of RSS** जैसे संगठन विदेशों में भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद और अध्यात्म का प्रचार करते हैं। प्रवासी भारतीयों के बीच भारतीय त्योहारों, संस्कृत भाषा और पारंपरिक ज्ञान के आयोजन इसी दिशा के उदाहरण हैं। संघ की शाखाएँ अब विश्व के विभिन्न देशों में भी सक्रिय हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में संघ की गतिविधियाँ भारतीय परंपरा को स्थानीय समाज से जोड़ रही हैं। परिणामतः, भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का हिस्सा बन चुकी है।

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और वैश्विक भारतीय समुदाय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शताब्दी वर्ष तक अपने सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में फैले भारतीय समुदाय के बीच गहरी पहचान बनाई है। संघ का उद्देश्य भारतीय मूल्यों और ज्ञान परंपरा को प्रवासी भारतीयों तक पहुँचाना और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना रहा है। इसके तहत संघ ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों, प्रवासी भारतीय संगठनों और सामाजिक अभियानों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, भाषा, शिक्षा और धर्म के मूल्यों का प्रसार किया है।

विश्वभर में बसे प्रवासी भारतीय न केवल आर्थिक बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने जहां अपने निवास देशों में शिक्षा, व्यवसाय और राजनीति में उत्कृष्टता प्राप्त की, वहीं भारतीय संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान प्रणाली का प्रचार-प्रसार भी किया। संघ ने प्रवासी भारतीयों के बीच सामूहिक चेतना और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करने के लिए शिक्षा, योग, संस्कार और सामाजिक सेवा से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इससे प्रवासी भारतीय समुदाय ने अपने मूल देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी और जुड़ाव को मजबूत किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने वैश्विक स्तर पर भारतीय समुदायों के लिए एक सशक्त नेटवर्क का निर्माण किया है। इस नेटवर्क के माध्यम से संघ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में कार्यक्रमों का संचालन किया। संघ की पहल में विश्वभर में अध्ययन केंद्र, योग केंद्र, सांस्कृतिक संगोष्ठियाँ और सामुदायिक विकास परियोजनाएँ शामिल हैं। इन प्रयासों से न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक स्तर पर प्रसार हुआ, बल्कि प्रवासी भारतीयों में अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने की प्रेरणा भी मिली।

**आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता**

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल प्राचीन समय तक सीमित नहीं है, बल्कि आज के आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता उतनी ही महत्वपूर्ण है। विज्ञान, दर्शन, शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था में भारतीय चिंतन का मूल आधार **'समन्वय'** और **'समग्रता'** रहा है, जो आधुनिक वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है। भौतिकवाद और उपभोक्तावाद से प्रभावित समाज को भारतीय परंपरा आध्यात्मिक संतुलन और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा, शोध और नीति-निर्माण में भारतीय विचारों का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है।

तकनीकी और डिजिटल क्रांति ने दुनिया को नई संभावनाएँ प्रदान की हैं, किंतु इसके साथ कई सामाजिक और नैतिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा, विशेषकर **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** और **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** जैसे सिद्धांत, डिजिटल युग को मानव-केंद्रित बनाने की प्रेरणा देते हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में नैतिक प्रयोग की दिशा भारतीय परंपरा से निकलती है। योग और ध्यान की विधियाँ आज डिजिटल तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान में विश्व स्तर पर उपयोग हो रही हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान आधुनिक तकनीकी विकास को मानवीय मूल्य आधारित बनाने की क्षमता रखता है।

आज की दुनिया आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, असमानता और संघर्ष जैसी समस्याओं से जूझ रही है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व शांति और सतत विकास के लिए एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करती है। अहिंसा, करुणा, सहयोग और पर्यावरण संतुलन जैसे सिद्धांत मानवता को साझा भविष्य की ओर ले जाते हैं। **'धर्म'** और **'ऋतुचक्र'** आधारित जीवन दृष्टि सतत विकास के लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप है। साथ ही, भारतीय विचार **''लोकसंग्रह''** और **''विश्वबंधुत्व''** का संदेश देकर वैश्विक नैतिक मूल्यों की नींव मजबूत करता है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भारतीय योग दर्शन, आयुर्वेद और शांति दर्शन को व्यापक स्वीकृति मिल रही है।

**5. निष्कर्ष**

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से मानवता के जीवन को संतुलित, सार्थक और स्वास्थ्यपूर्ण बनाने में योगदान करती रही है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, शिक्षा और नैतिक मूल्यों का यह समग्र दृष्टिकोण न केवल भारत के लिए, बल्कि वैश्विक समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर यह स्पष्ट हो गया है कि संघ ने भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल संरक्षित नहीं किया, बल्कि उसे विश्व स्तर पर प्रचारित करने और मान्यता दिलाने का कार्य भी किया है। संघ की शाखाएँ, सेवा-प्रकल्प, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ और प्रवासी भारतीयों के बीच सांस्कृतिक गतिविधियाँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

वैश्विक स्तर पर योग और ध्यान ने मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक संतुलन के क्षेत्र में योगदान दिया है। आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा प्रणाली ने समग्र स्वास्थ्य और रोग-प्रतिरोधक क्षमता में अपनी भूमिका सिद्ध की है। भारतीय दर्शन ने जीवन के उद्देश्य, नैतिक मूल्य और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया है। इसके अलावा, भारतीय शिक्षा प्रणाली का **''गुरुकुल मॉडल''** और **''समग्र शिक्षा''** का दृष्टिकोण विश्वभर में शिक्षा के वैकल्पिक मॉडल के रूप में उभर रहा है।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा अब केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वैश्विक समाज के लिए जीवन-दर्शन और सांस्कृतिक मार्गदर्शन का स्रोत है। संघ की पहलें और प्रयास इस परंपरा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने और जीवन के विविध क्षेत्रों में लागू करने के लिए महत्वपूर्ण साबित हो रही हैं।

आने वाले समय में भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रसार मानवता के लिए स्थायी विकास, शांति और संतुलन का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह परंपरा आधुनिक विज्ञान, वैश्विक शिक्षा और स्वास्थ्य प्रबंधन के साथ समन्वित होकर विश्व समाज में अपनी भूमिका और अधिक सुदृढ़ कर सकती है।

**संदर्भ सूची :**

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ साहित्य, भारतीय संस्कृति और संघ दृष्टि, प्रकाशन विभाग, नागपुर।
2. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ साहित्य (नागपुरः प्रकाशन विभाग)।
3. मिश्रा, रमेशचंद्र, भारतीय दर्शन और संस्कृति, नई दिल्ली : भारतीय विद्या भवन, 2018।
4. गोविंदाचार्य, के. एन. (2012) भारतीय शिक्षा और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान।
5. विद्या भारती (2020), शिक्षा में भारतीय दृष्टिकोण, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान।
6. आर.एस.एस. साहित्य विभाग (2015), संघ का दृष्टिकोण : संस्कृति, शिक्षा और राष्ट्र, नागपुर : संघ साहित्य।
7. United Nations General Assembly Resolution, 2014: International Day of Yoga.
8. Frawley, David. Yoga and Ayurveda: Self-Healing and Self-Realization, Lotus Press, 2005.
9. Radhakrishnan, S. Indian Philosophy, Oxford University Press, 1996.

10. World Health Organization (WHO), Global Centre for Traditional Medicine Report, 2022.
11. Patanjali, Yoga Sutras, Translation and Commentary by Swami Vivekananda, Advaita Ashrama, 2010.
12. Venkataraman, R. Gurukul Education in India: Past and Present, New Delhi: National Book Trust, 2018.
13. Singh, K. Ayurveda: The Science of Life, New Delhi: Chaukhamba Sanskrit Series, 2015.
14. Andersen, W. K., & Damle, S. D. (2018). The RSS: A view to the inside. New Delhi: Penguin Random House.
15. Joshi, M. (2020). RSS: The long journey. New Delhi: Rupa Publications.
16. Radhakrishnan, S. (2008). Indian philosophy (Vols. 1–2). New Delhi: Oxford University Press.
17. Sharma, R. S. (2015). Indian knowledge tradition and contemporary challenges. New Delhi: Concept Publishing.
18. Singh, K. (2019). Indian knowledge systems: A historical perspective. New Delhi: NCERT.
19. Vivekananda, S. (2012). The complete works of Swami Vivekananda. Kolkata: Advaita Ashrama.